a cost of As. 1½ per day all the 365 days in the year, while indigenous fowls can thrive without a single pie being spent on their food? Has this problem been specifically discussed?

Shri M. V. Krishnappa: The average number of eggs which an indigenous fowl can give is 53 in India, whereas a White Leghorn can give as many as 208 eggs in a year. Even if the cost of maintaining a White Leghorn is one hundred per cent more, still, the farmer is likely to get three hundred per cent more in the form of eggs.

रेलवे यात्री सुविधायें

\+

३२७. { श्री श्रीनारायण दास :
श्री वि० च० शुक्ल :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या तीसरे दर्जे के रेलवे यात्रियो की कठिनाइयो और असुविधाओ के अध्ययन के लिये रेलवे के उच्च पदाधिकारियों के छिपे वेष मे घूमने की कोई प्रस्थापना विचाराधीन है ; और

(ख) यदि हा, तो उसका स्वरूप क्या है ?

रेलवे उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) : (क) इस तरह का एक सुझाव सरकार को मिला था, जिसे सब रेलो को भेज दिया गया है और उनसे कहा गया है कि, जैसा मुमकिन हो, इस पर कारंवाई करें ।

(ख) सुझाव यह है कि रेलवे के अफसर तीसरे दर्जे के डिब्बों मे छिपकर सफर करें और देखें कि तीसरे दर्जे में लोग किन हालतों में सफर करते हैं और जहा कही जरूरी हो, उनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिये सुझाव दें ।

Shri Shree Narayan Das: Has any of the Railways begun acting on the suggestion? If so, which is the Railway?

Shri Shahnawaz Khan: Yes, the Western Railway has started it. Some of its officers have started travelling *in cognito*.

Shri Shree Narayan Das: Has any report as to the result of such observations made by such officials been made available to Government?

Shri Shahnawaz Khan: Yes, they have submitted whatever their experiences were to the Railway concerned.

श्री भक्त दर्शन : क्या कभी माननीय मंत्री जी और माननीय उप-मंत्री जी ने यह विचार किया है कि उन्हें भी वेष बदल कर यात्रियो की कठिनाइयो का अध्ययन करना चाहिये ?

रेलवे मंत्री (श्री जगजीवन राम) : भेस बदल कर तो ऐसा नही किया है, क्योंकि डर है कि भेस बदलने पर वे पहचाने जायेंगे, लेकिन अमूमन बिना नोटिस के वे तीसरे दर्जे के कम्पार्टमेंट्स मे जा कर देखा करते है कि लैट्रीन और पानी की क्या हालत है और वहा ओवर-क्राउडिंग है या नही ।

Indo-Norwegian Fishing Projects

*328. **Shri Rameshwar Tantia:** Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state what is the progress of the Indo-Norwegian fishing project at Neendakara?

The Deputy Minister of Agriculture (Shri M. V. Krishnappa): The progress so far achieved by the Indo-Norwegian Project set up in 1953 is placed on the Table of the Lok Sabha. [*See* Appendix II, annexure No. 59.]

Shri Rameshwar Tantia: Have any steps as suggested by the Norwegian people been taken to mechanise our fishing operations?

Shri M. V. Krishnappa: The object of the entire project is to bring about mechanisation of fishing and increase